

रसायनिक खेती: एक बंद गली

क्या धरती और झेल पाएगी?

छलती जाती माटी
छाती तेरी...
कितना और

जहर पाएगी?

पता नहीं
केमिकल की
यह बरसात
कब रुक पाएगी?



रंगों का बदलता सच

लाल पीली हरियाली

यह काली नीली

रह जाएगी।

जब हम उपज के लिए मिट्टी को निचोड़ते हैं, तो हम केवल खेत नहीं, बल्कि भविष्य को बंजर बना रहे हैं। यह 'केमिकल की बरसात' उपजाऊ भूमि को जहरीले रेगिस्तान में बदल रही है।

अदृश्य नियोक्ता गायब हो रहा है

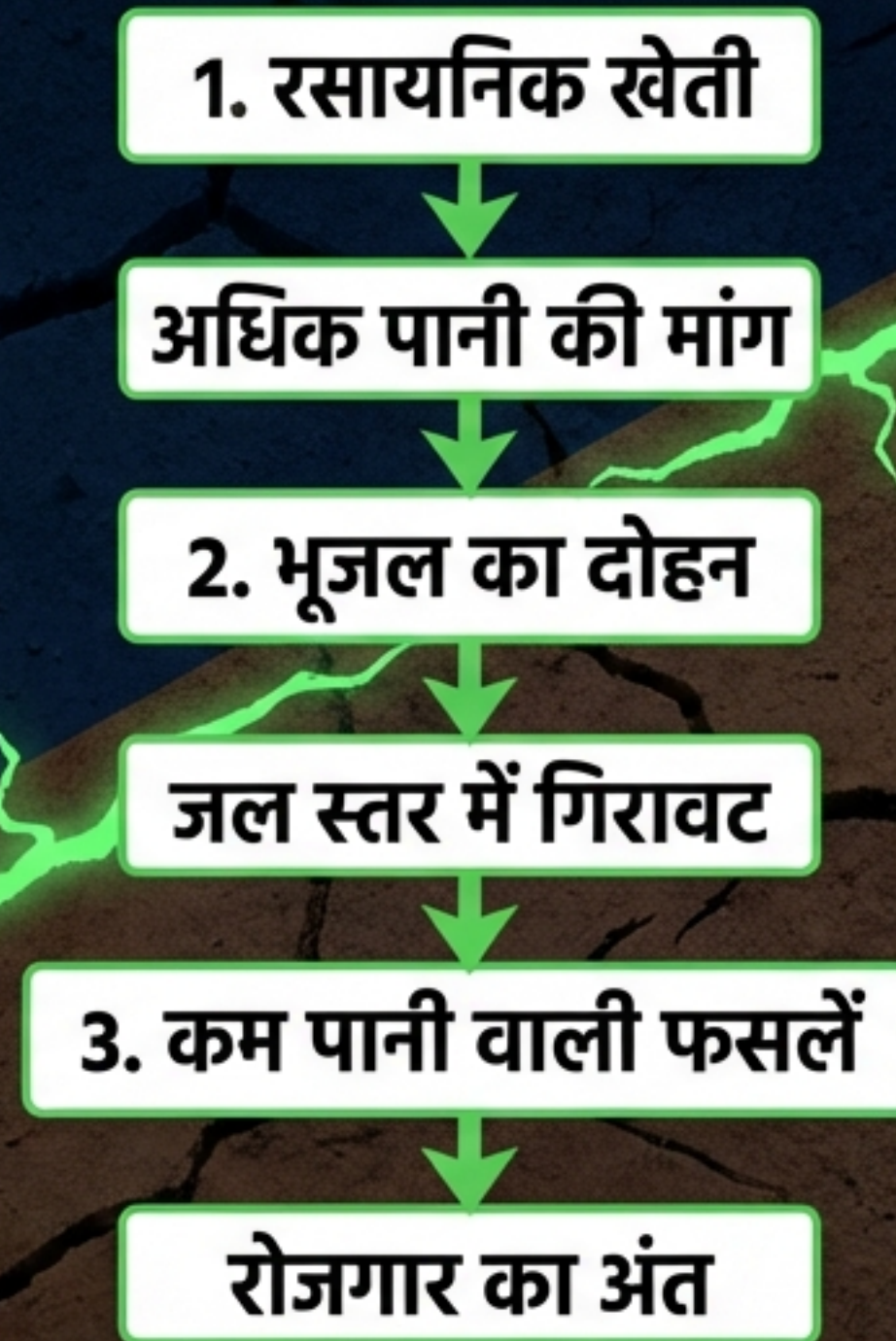
भूजल (Groundwater) भारत का 'अदृश्य नियोक्ता' है। इसने लाखों खेतिहर मजदूरों को रोजगार दिया है।

लगभग हर 4 में से 1 ग्रामीण श्रमिक 'कैजुअल लेबर' (दिहाड़ी मजदूर) है। जब जल स्तर गिरता है, तो खेती का काम कम हो जाता है और मजदूरों की रोजी-रोटी-रोटी छिन जाती है।



खेती की प्यास और सूखा भविष्य

रसायनिक खादों और 'हरित क्रांति' वाली फसलों को बेहिसाब पानी चाहिए।



स्रोत: डाउन टू अर्थ - 'इनविजिबल एम्प्लॉयर'

अरावली: हमारी ढाल खतरे में

Context: अरावली पर्वत श्रृंखला थार रेगिस्तान को आगे बढ़ने से रोकती है। यह भूजल को रीचार्ज करने और हरियाली बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

The Threat: खनन और '100 मीटर' की संकीर्ण परिभाषा के कारण इस ढाल को नष्ट किया जा रहा है। अगर अरावली नहीं रही, तो उत्तर भारत रेतीले तूफानों और सूखे की चपेट में होगा।



गुलाबी खूबसूरती या छिपा हुआ खतरा?

Case Study: केरल के कुट्टनाद में 'ओमाराना' वॉटर लिली (Water Lilies) का फैलाव।

The Reality: यह फूल पर्यटकों को लुभाता है, लेकिन यह पानी की गुणवत्ता बिगड़ने का संकेत भी है। यह आक्रामक पौधा है जो जलीय जीवन को नुकसान पहुँचा सकता है और मीथेन गैस पैदा करता है। हर 'खिलती' हुई चीज़ स्वस्थ नहीं होती।



मुनाफा या जिंदगी?

वेब सीरीज़ 'फार्मा' की तरह, रासायनिक खेती का उद्योग भी अक्सर 'मुनाफे' को 'सेहत' से ऊपर रखता है।

हम मिट्टी को दवा (केमिकल) खिला रहे हैं, जबकि उसे पोषण (जैविक खाद) की जरूरत है। यह लालच और नैतिकता की लड़ाई है।



जब पानी ही जहर बन जाए

CLEAN CITY
AWARD

इंदौर - भारत का
सबसे स्वच्छ शहर।

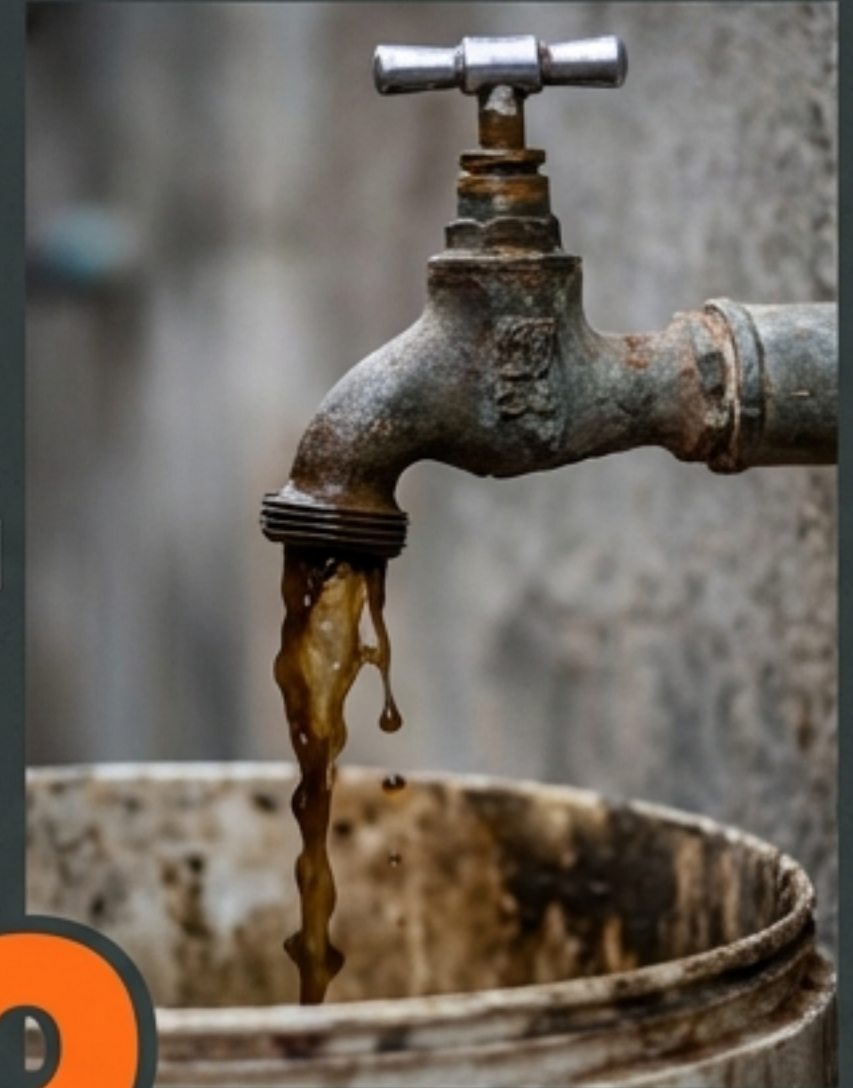


स्वच्छ सर्वेक्षण

Case Study: इंदौर - भारत का सबसे स्वच्छ शहर।

The Tragedy: गंदे पानी (सीवेज) के पीने के पानी में मिलने से लोगों की जान गई।

Lesson: हम पानी की सप्लाई पर ध्यान देते हैं, लेकिन सीवेज पर नहीं। जब तक हम अपने अपशिष्ट (Waste) का प्रबंधन नहीं करेंगे, तब तक 'स्वच्छ जल' एक सपना ही रहेगा।



समाधान: जड़ों की ओर वापसी

रसायनिक खेती का जवाब है - 'क्लाइमेट-स्मार्ट' और 'जैविक' खेती।
हमें उन फसलों की जरूरत है जो कम पानी पिएं और मिट्टी को ताकत दें।



लोबिया: उम्मीद की दाल



कम पानी: यह सूखे को झेल सकती है।



मिट्टी की खाद: यह हवा से नाइट्रोजन खींचकर मिट्टी को उपजाऊ बनाती है।



पोषण: प्रोटीन और विटामिन से भरपूर।



भविष्य के लिए तैयार फसल

वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि: शोधकर्ता मानते हैं कि लोबिया (Cowpea) बढ़ती गर्मी और खराब मिट्टी में भी जीवित रह सकती है।

इतिहास: अफ्रीका से भारत तक, 2500 ईसा पूर्व से यह फसल हमारा पेट भर रही है। यह “क्लाइमेट-रेडी” (Climate-Ready) है।



2500 BC



2026

कचरे से कंचन

‘सीवेज’ समस्या नहीं, समाधान है।

1. अपशिष्ट
ट्रीटमेंट



2. खाद और
ऊर्जा निर्माण



नदियां साफ रहेंगी और
मिट्टी को सस्ता, सुरक्षित
पोषण मिलेगा।



3. जैविक खाद
का उपयोग



किसान की सुरक्षा, प्रकृति की रक्षा

रसायनिक खेती	जैविक/टिकाऊ खेती
 • महंगा पानी • महंगी खाद • बंजर होती जमीन	 • कम लागत • स्वस्थ मिट्टी • लंबे समय तक रोजगार

“मिट्टी बचेगी, तो रोजगार बचेगा।”

Grounded Editorial

अब चुनने का वक्त है

अतीत: अंधाधुंध केमिकल,
सूखता भूजल, बीमार समाज।

भविष्य: जैविक खेती, लोबिया
जैसी समर्थ फसलें, जल संरक्षण।

